अनधिमान वक्र या तटस्थता वक्र विश्लेषण

Indifference Curve Approach

Dr. Dinesh Kumar Gupta

(Assistant Professor - Economics)

Rajkiya Mahavidyalaya Amori, Champawat.

अनधिमान वक्र विश्लेषण–

एफ0 वाई0 एजवर्थ ने 1881 ई0 में सर्वप्रथम अधिमान वक्र विधि का प्रतिपादन किया जो संख्यावाची माप पर आधारित था। 1892 ई0 में फिशर ने इसका उपयोग उपभोक्ता की संस्थिति के संदर्भ में किया। सर्वप्रथम 1906 ई0 में विलफेड पैरेटो ने क्रमवाची परिकल्पना पर आधारित अनधिमान वक्र का प्रतिपादन किया बाद में स्लट्स्की,बाउले,जानसन ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। 1934ई0 में आधुनिक अनधिमान वक्र विकसित हुआ जिसके प्रतिपादक थे हिक्स एवं ऐलेन। पर सर्वप्रथम क्रमवाचक माप पर 1934 में ही हिक्स ने ऐलेन के साथ Economica में इसका विश्लेषण किया। 1934 ई0 में प्रकाशित पुस्तक Value and Capital 'में हिक्स नें स्वयं अनधिमान वक्र का प्रतिपादन किया था।

परिभाषा — दो या दो से अधिक वस्तुओं के ऐसे संयोगों या युग्मों को प्रदर्शित करने वाला वक्र जिससे उपभोक्ता को समान सन्तुष्टि प्राप्त हो,सम सन्तुष्टि वक्र, अनधिमान वक्र या तटस्थता वक्र कहलाता है। इसे तटस्थता वक्र, समसंतुष्टि वक्र, उदासीनता वक, समान उपयोगिता वक्र जैसे नामो से जाना जाता है।

मान्यताएं –

1. उपभोक्ता विवकपूर्ण है। वह अपनी उपयोगिता को अधिकतम करने का प्रयास करेगा।
2. X और Y दो वस्तुएँ हैं।
3. बाजार में वस्तुओं की कीमतों की पूरी सूचना उपभोक्ता के पास होती है।
4. दोनों वस्तुओं की कीमतें निश्चित हैं।
5. समस्त विश्लेषण में उपभोक्ता की रुचियों, आदतों और आय में कोई परिवर्तन नहीं होता।
6. उदासीनता वक्र की ढाल नीचे दाई ओर को ऋणात्मक झुकाव की होती है।अर्थात प्रतिस्थापन की सीमान्त दर ऋणात्मक होगी। जिसके सन्दर्भ मे उपभोक्ता जब X वस्तु का उपभोग एक एक इकाई बढाता है तो बदले मे Y वस्तू का उपभोग क्रमशः घटते क्रम मे त्याग करता है।

6. निर्वल क्रमवद्धता– अनधिमान वक्र विश्लेषण निर्बल क्रमबद्धता पर आधारित है।
7. अनधिमान वक्र अधिमान के सम्बन्ध में सकर्मकता तथा स्थिरता के सम्बन्ध पर आधारित है।

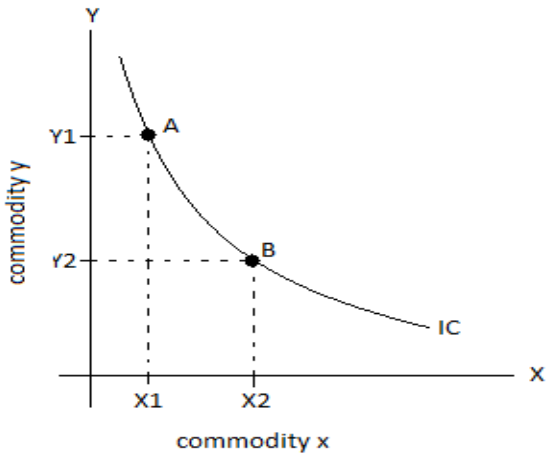

प्रतिस्थापन की सीमान्त दर– अनधिमान वक्र प्रतिस्थापन की सीमान्त दर (Marginal Rate of Substitution) की घटती हुयी मान्यता पर आधारित है। घटती प्रतिस्थापन की सीमान्त दर का अर्थ यह है कि X की जैसे–जैसे एक–एक इकाइयॉ उपभोग मे बढ़ायी जायें तो उसे प्राप्त करने के लिए Y की छोड़ी गयी मात्रा जिससे उपभोक्ता सन्तुष्टि के उसी स्तर पर बना रहे, निरन्तर कम होती जायेगी। अतः अनधिमान वक्र मूल बिन्दु की ओर उन्नतोदर होगा।

Combination	(X)	(Y)	MRS xy
A	1	15	--
B	2	8	1x =7y
C	3	5	1x = 3y
D	4	3	1x = 2y
E	5	2	1x =1y

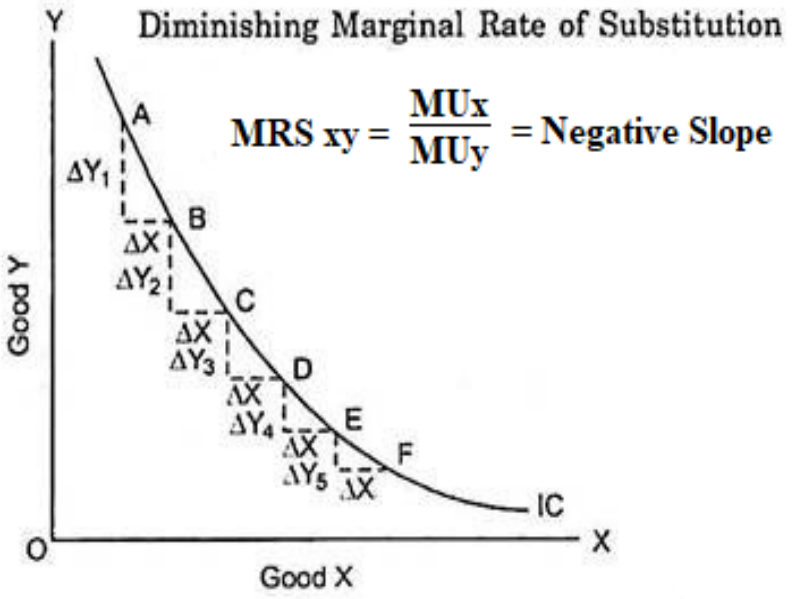

अनधिमान वक्र की विशेषताएं–

1.अनधिमान वक्रो का ढाल ऋणात्मक होता है। या अनधिमान वक्र मूल बिन्दु के उन्नतोदर होते है तथा प्रतिस्थापन की सीमान्तदर ऋणात्मक होती है।

2. अनधिमान वक न तो आधार अक्ष के समानान्तर, लम्बवत, बायें से दायें ऊपर, तथा मूल विन्दु के नतोदर नही हो सकते।और नतोदर की स्थिति मे प्रतिस्थापन की सीमान्त दरें धनात्मक होगी।

3.दो अनधिमान वक्र न तो एक दूसरे को काट सकते है और न ही स्पर्श कर सकते है।

4.ऊॅचा अनधिमान ऊचें संतुष्टि के स्तर को प्रदर्शित करता है।

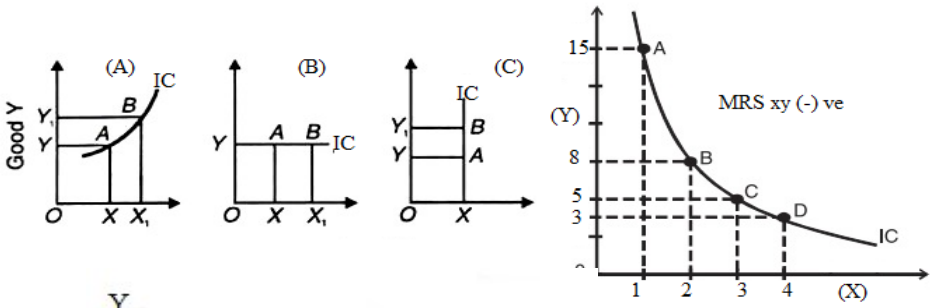

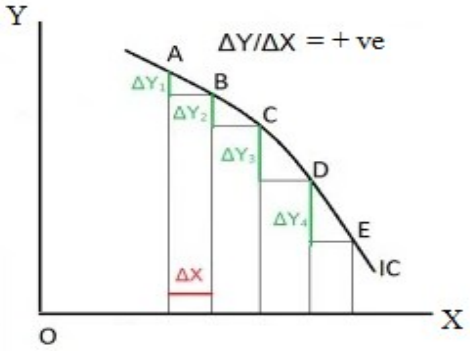

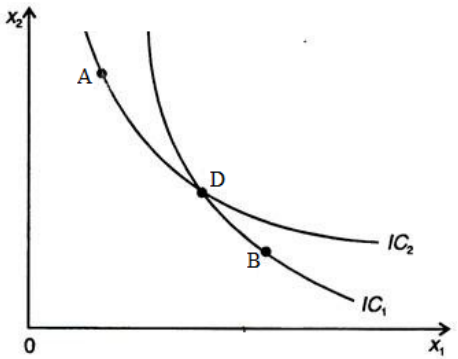

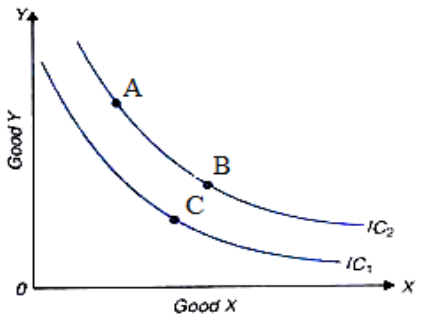

Higher IC shows higher satisfaction

पूर्ण स्थानापन्न व पूर्ण पूरक वस्तुओं मे आकार–

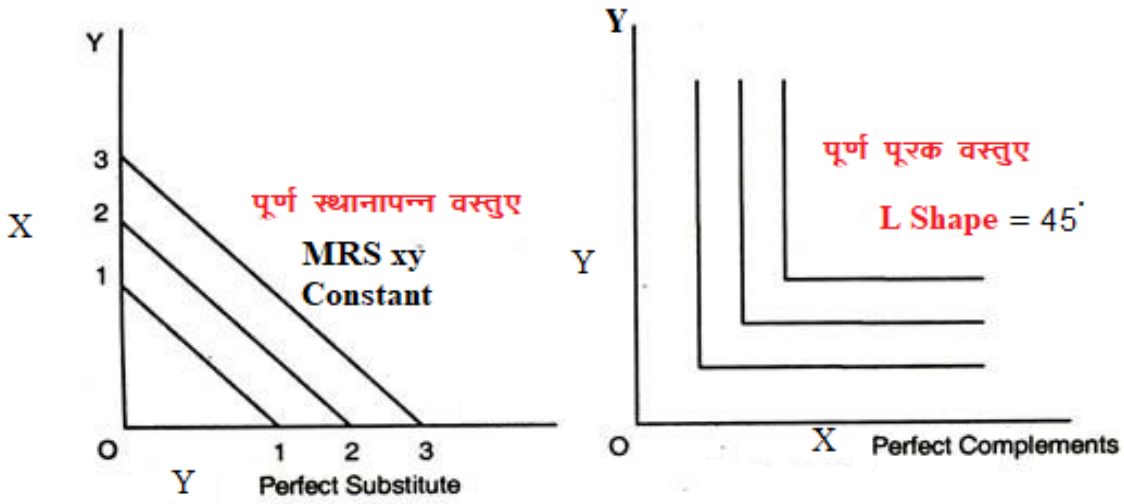

Thank You